समास

-दिव्या
अतिथि शिक्षक, हिन्दी विभाग
वैशाली महिला कालेज, हाजीपुर

शेषांश :—

(11) द्विगु समास → जिस समास में पहला पद संख्यावाचक हो, उसे द्विगु समास कहते हैं। जैसे —

त्रिभुवन- तीन भुवनों का समाहार (समूह)।
पंचवटी- पाँच वटों का समाहार।
चौराहा- चार राहों का समाहार।

अन्य तत्पुरुष समास

(1.) नञ् तत्पुरुष समास → जिस समास में पहला पद नकारात्मक अर्थ बतलानेवाला हो, उसे नञ् तत्पुरुष समास कहते हैं। जैसे—

अयोग्य - न योग्य।
असंभव - न संभव।
अनुचित - न उचित।

(2.) प्रादि तत्पुरुष समास → जिस समास में पहला पद 'प्र' आदि उपसर्गों में से कोई हो, उसे प्रादि तत्पुरुष समास कहते हैं। जैसे -

प्रगति - प्रकृष्ट (श्रेष्ठ) गति।
सुपुत्र - सुन्दर पुत्र।
कुरूप - कुत्सित रूप।

(3.) उपपद तत्पुरुष समास → जिस समास में दूसरा पद पहले पद के प्रयोग पर आश्रित हो, उसे उपपद तत्पुरुष समास कहते हैं। जैसे -

जलद - जल देनेवाला

कुम्भकार - कुम्भ करनेवाला
(बनानेवाला)

⇒ **विशेष** - उपर्युक्त उदाहरणों में क्रमशः 'द' एवं 'कार' का अर्थ पूर्वपद 'जल' एवं 'कुम्भ' के प्रयोग पर निर्भर है।

(4.) **मध्यमपदलोपी तत्पुरुष समास** → जिस समास में दो पदों के बीच का कोई पद लुप्त हो, उसे मध्यमपदलोपी समास कहते हैं। जैसे —

स्वर्णाभूषण - स्वर्ण से निर्मित आभूषण

स्वर्णाक्षर - स्वर्ण से लिखा गया अक्षर।

— क्रमशः